CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - B**	
	SEMI PRELIM - I	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

खण्ड : 'क'

A.1.

(क) नाखूनों के बारे में लेखक का यह कहना है कि किसी समय में नाखून मनुष्य के शिकार एवं जीवन-रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक रहे होंगे । अस्त्रों के आने से धीरे-धीरे इनका महत्व कम हो गया । **2**

(ख) प्रकृति मनुष्य को यह याद दिलाती है कि वह आज भी लाखों वर्ष का नखदंतावलंबी प्राणी है और यही कारण है कि प्रकृति मनुष्य के नाखून को बढ़ाती रहती है । **2**

(ग) नाखूनों के बारे में लेखक का यह कहना है कि किसी समय में नाखून मनुष्य के शिकार एवं जीवन-रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक रहे होंगे । अस्त्रों के आने से धीरे-धीरे इनका महत्व कम हो गया । **2**

(घ) नाखून के बारे में प्राणिशास्त्रियों का निश्चित मत है कि नाखून बढ़ने के कारण शरीर ने इन्हें स्थायी रूप से अपना लिया है । **2**

(ङ) एक दिन लेखक की पुत्री ने उससे यह प्रश्न पूछ लिया था कि नाखून क्यों बढ़ते हैं ? **1**

A.2.

(क) भारत की धरती को सकल विभवों की आकर कहा गया है । क्यों - भारत की धरती सब प्रकार के स्वर्गिक सुख देने वाली है । **2**

(ख) ध्रुववासी भीषण ठंड और बर्फ में रहते हैं और सदा काँपते रहते हैं । **2**

(ग) भारतवासी का जीवन इसलिए धन्य है क्योंकि उसका जन्म स्वर्ग-सी सुखद और वैभवशाली धरती की गोद में हुआ है । **2**

खण्ड : 'ख'

A.3.

(क) वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। जब वही शब्द व्याकरणिय नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब वही शब्द पद बन जाता है। **2**

(ख)
(i) मैंने एक बहुत लंबा व्यक्ति देखा । **1**
(ii) जब बादल घिर आए तब वर्षा होने लगी । **1**
(iii) शीला बाजार गई और पुस्तक खरीद लाई । **1**

A.4.

(क) (i) पुरुषोत्तम - कर्मधारय समास **1**

(ii) यथाशक्ति - अव्ययीभाव समास **1**

(ख) (i) देशभक्ति - देश के लिए भक्ति - तत्पुरुष समास **1**

(ii) चक्रधर - चक्र को धारण करता ह - बहुव्रीहि समास **1**

A.5.

(क) (i) देश महात्मा गांधी का सदा आभारी रहेगा । **1**

(ii) फूलों की एक माला ले आइए । **1**

(iii) पुलिस के द्वारा डाकुओं का पीछा किया गया । **1**

(iv) मोहन घर गया और सो गया । **1**

(ख) (i) तुम्हारी बातों ने तो मकान मालिक और किराएदार की लड़ाई में **आग में घी डालने** का काम किया । **1**
मुहावरा - आग में घी डालना - क्रोध को भड़काना ।

(ii) **आसमान सिर पर उठाना -** बहुत शोर करना । **1**
वाक्य : पिता के घर से बाहर निकलते ही बच्चों ने **आसमान सिर पर उठा लिया** ।

खण्ड : 'ग'

A.6.

(क) बड़े भाई ने पढ़ाई के लिए दिन - रात परिश्रम किया । उसने न दिन देखा, न रात । उन्होंने रात को दस बजे तक पढ़ा । फिर सुबह चार बजे उठकर पढ़ा । स्कूल जाने से पहले छ : से साढ़े नौ तक पढ़ा । पढ़ते - पढ़ते उनका मुख निस्तेज हो गया, किंतु वह कोर्स का एक - एक शब्द चाट गए । **2**

(ख) इस दिन को अमर बनाने के लिए काफी तैयारियाँ की गई थी । इस वर्ष लोग जितना दे सकते थे उतना योगदान दिया । केवल प्रचार में दो हजार रुपया खर्च किया गया था । बड़े बाजार के प्राय :मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि मानों स्वतंत्रता मिल गयी हो । कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे । अनेक स्थानों सें जुलूस निकालने का कार्यक्रम बनाया गया। **2**

(ग) धर्मतल्ले पहुँचते - पहुँचते आंदोलनकारियों की भीड़ बहुत अधिक बढ़ गई । वहाँ आंदोलनकारी बहुत बड़ी संख्या में लाठी चार्ज से घायल हो गए । इस कारण जुलूस टूट गया । **1**

A.7. लोगों का मत था कि ततॉंरा की तलवार लकड़ी की होने पर भी उसमें अदभुत दैवीय शक्ति थी। निकोबारियों का यह मत है कि ततॉंरा की तलवार से कार - निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा

	लिटिल अंदमान है जो कार निकोबार से आज ८६ किमी दूर स्थित है । लोग यह मानते थे कि तताँरा अपने साहसिक कारनामे इसी तलवार के द्वारा कर पाता था ।	5
	अथवा	
	तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था । सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था । वह लोगों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था । उसके इस त्याग की वजह से वह बहु चर्चित था। सभी उसका आदर करते। वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते तो वह भागा - भागा वहाँ पहुँच जाता। इन्हीं कारणों से निकोबार के लोग तताँरा को पसंद करते थे ।	5
A.8.		
(क)	ईश्वर कण-कण, घट-घट वासी है पर हम उसे देख नहीं पाते क्योंकि हमारी आँखों पर अज्ञानता की पट्टी लगी हुई है । इस कारणवश हम ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघरों में ढूँढते हैं जबकि वह हमारे हृदय में, हमारी अंतरात्मा में निवास करते हैं । हमारी स्थिति उस कस्तूरी मृग की तरह हो जाती है जिसकी नाभि में कस्तूरी पायी जाती है लेकिन वह उसकी प्राप्ति के लिए व्याकुल होकर वन में भटकता रहता है ।	2
(ख)	कबीर के अनुसार, मनुष्य को अहंकारशून्य और मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए । क्योंकि - मीठी वाणी से बोलने वाले तथा सुनने वाले - दोनों के मन शांत होते हैं ।	2
(ग)	तालाब की समानता दर्पण के साथ दिखाई गई है । दर्पण और तालाब दोनों वस्तुओं का प्रतिबिंब बनाते हैं इसलिए दोनों में समानता दिखाई गई है ।	1
A.9.	मीरा मूल रूप से भगवान कृष्ण की भक्त थीं । अत: उनके पदों का प्रतिपाद्य है- कृष्ण भक्ति । इन पदों में उन्होंने उनके दो रूपों की उपासना की है - रक्षक रूप तथा रसिक रूप । रक्षक रूप की आराधना करते हुए उन्होंने प्रभु से अपनी रक्षा करने की गुहार की है । वे स्वयं को उनकी दासी बताते हुए कहती हैं -	
	दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर ।	
	वे स्वयं को कृष्ण का अपना जन ही कहती हैं । वे कृष्ण की आराधना के लिए उनकी चाकरी करने को तैयार हैं । वे उनके महल में रहकर उनके विहार के लिए बाग लगाने को तैयार हैं । वे वृदांवन की गली - गली में घूमकर कृष्ण का गुणगान करना चाहती हैं ।	
	दूसरे पद् में वे कृष्ण के सुंदर छबीले रूप की आराधना करती हैं । इस रूप में वे उनके मुरलीधर रूप का स्मरण करती हैं । वे स्वयं लाल साड़ी पहनकर उनसे मिलना चाहती हैं । वे उन्हें यमुना- तट की याद कराकर प्रेम के बंधन में बाँध लेना चाहती हैं ।	5
	अथवा	
	'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है । वह मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि संकीर्णताओं	

	से मुक्त करना चाहता है । वह मनुष्य में उदारता के भाव भरना चाहता है । कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे । वह दुखियों, वंचितों और ज़रूरतमंदों के लिए बड़े–से–बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो । वह कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अटूट त्याग से प्रेरणा ले । वह अपने मन में करुणा का भाव जगाए । वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे । एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्व को प्राप्त करे । वह हँसते–खेलते जीवन जिए तथा आपसी मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करे । उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए ।	5
A.10.	मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह समाज में रहते हुए एक दूसरे से व्यवहार करता है । रुसो के अनुसार : ''मनुष्य जन्म से स्वतंत्र होता है परंतु सर्वत्र वह बंधनों में जकड़ा हुआ पाया जाता है ।'' जन्म लेते ही मनुष्य को भाई-बहन, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी आदि अनेक प्रकार के रिश्तों से पहचान मिलती है । वह आरंभ में माता-पिता के नाम से जाना जाता है । विद्यालय में गुरु-शिष्य का संबंध बनता है । अपने पैरों पर खड़े होने पर भी उसे एक प्रकार के कार्यालयीन रिश्ते निभाने पड़ते हैं । रिश्ता बनाने में लंबा समय लग जाता है लेकिन उसे टूटने में ज्यादा वक्त नहीं लगता । खून के रिश्ते सबसे मजबूत रिश्ते होते हैं । विवाह के बाद पति-पत्नी का रिश्ता बनता है । इस प्रकार रिश्तों का समाज में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है । बिना रिश्तों के समाज की कल्पना भी व्यर्थ है । रिश्ते स्वार्थ पर आधारित होते हैं । समाज हर रिश्ते की व्याख्या अपने दृष्टिकोण से करता है ।	5
	अथवा	
	हरिहर काका अनपढ़ थे । उन्हें इस बात का अच्छी तरह ज्ञान था की सभी की नजर उनकी जमीन पर है । महंत और अपने भाईयों के स्वार्थी व्यवहार को देखते हुए, उन्होंने यह सोच लिया था कि वे एक बार मरना पसंद करेंगें लेकिन रमेसर की विधवा की तरह गलती नहीं करेंगे । रमेसर की विधवा को बहला-फुसलाकर उसके भाईयों ने सारी जमीन अपने नाम लिखवा ली और उसे घुट-घुटकर मरने के लिए छोड़ दिया । उन्होनें इसी कारण अपने भाईयों से कह दिया था कि वे जीते-जी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे । मरने के बाद जमीन उनके भाईयों के नाम हो जाएगी । इस प्रकार हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते थे ।	5
	खण्ड : 'घ'	
A.11. (क)	**आत्मानिर्भरता**	
	''आत्मनिर्भरता'' का अर्थ है - अपना सहारा आप बनना । यह एक श्रेष्ठ गुण है जो साधना और परिश्रम से विकसित होता है । आत्मविश्वास इसका मूल आधार है । आत्मनिर्भरता का गुण मानव का एकमात्र सच्चा मित्र है । जिस देश के नागरिको में आत्मनिर्भरता का गुण आ जाता है वह प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करने में समर्थ हो जाता है । ऐसे व्यक्ति के बारे में ही हरिऔधजी ने कहा है -	
	''पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे, सैकड़ो मरुभूमि में नदियाँ बहा देतें हैं वे,'' । इतिहास साक्षी है कि आत्मनिर्भरता के कारण ही शिवाजी, महाराणा प्रताप, महात्मा गांधी, नेपोलियन ने प्रसिद्धि प्राप्त की । आत्मनिर्भरता ही जीवन में उन्नति का साधन है । इससे व्यक्ति में आत्मबल का संचार होता है । उसमें पुरुषार्थ, नैतिकता एवं उत्साह की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है ।	5

(ख)

वृक्षारोपण

वैज्ञानिक परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वृक्षों से मानव को अनेक लाभ हैं । सर्वप्रथम तो वृक्षों से तापमान का नियंत्रण होता है । सूर्य के प्रकाश में वृक्ष अत्यधिक मात्रा में ऑक्सीजन का निर्माण करते हैं जिससे वातावरण शुद्ध होता है । इस कारण वृक्षों की कटाई को रोककर वृक्षारोपण पर जोर देना होगा। कुछ वृक्षों और जड़ी - बूटियों से अमूल्य औषधियों की प्राप्ति होती है । जैसे नीम, तुलसी इत्यादि । वृक्ष की जड़े मिट्टी को बाँधे रखती हैं जिससे बारिश में उपजाऊ मिट्टी बह नहीं पाती । वृक्ष समय पर वर्षा कराने में सहायक होते हैं । प्राचीन समय में तो साधु - संत वृक्षों का उदाहरण देकर हमें नैतिकता की शिक्षा दिया करते थे -

जैसे :

''वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।।''

इसी प्रकार कहा गया है कि फलों से लदा वृक्ष नीचे की ओर झुकता है उसी प्रकार विद्वान गुणवान व्यक्ति भी सदैव विनम्रता को धारण किए रहता है । वर्तमान समय में सरकार वृक्षारोपण पर बहुत अधिक ध्यान दे रही है । दिल्ली में 'हरित दिल्ली' अभियान भी चलाया जा रहा है । हमें यह समझना होगा कि वृक्ष ही हमारा जीवन है । **5**

(ग)

वर्षा का एक दिन

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है । ज्ञान ही मानव को शक्ति और आनंद प्रदान करता है । चरित्र निर्माण भी ज्ञान द्वारा ही संभव है । शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य ज्ञान माना गया है, किंतु यह उस समय दोषपूर्ण हो जाता है जब इसे शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य समझ लिया जाता है । इसका सांस्कृतिक उद्देश्य है, जाति की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायता प्रदान करना, जिससे वर्तमान पीढ़ी सुसंस्कृत बन जाये, सभ्य हो जाये । शिक्षा का एक सामाजिक उद्देश्य भी है कि ऐसे नागरिक तैयार होने चाहिए जो समाज - कल्याण व राष्ट्र - कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं । किसी एक उद्देश्य को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मान बैठना उचित नहीं है । अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित एवं सम्यक व्यक्तित्व का विकास करना है । **5**

A.12.

(क)

सेवा में,
सहायक निगमायुक्त (पश्चिमी क्षेत्र)
दिल्ली नगर निगम,
राजा गार्डन नई दिल्ली ।

विषय – पार्क का विकास करने हेतु पत्र ।

महोदय,

हम रघुवीर नगर के निवासी, आपका ध्यान इस क्षेत्र में पार्क के अभाव की ओर आकर्षित करना चाहते हैं । पच्चीस गज प्लाटवाले मकानों के क्षेत्र में कोई भी पार्क नहीं हैं । यद्यपि बीच में काफी स्थान खाली पड़ा है । इस क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम करने के लिए तथा बच्चो को खेलने के लिए एक पार्क की अत्यंत आवश्यकता है । इस और पहले भी कई बार ध्यान आकर्षित किया गया, पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि यहाँ शीघ्र ही एक पार्क का विकास करवाएँ । स्थानीय जनता इसमें भरपूर सहयोग देगी । आपकी इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,

हरीश रावत

रघुवीर नगर सुधार सभा

दिनांक .....

अथवा

सेवा में,

संपादक

लोकमत टाइम्स,

मुंबई ।

5

विषय – पेयजल और स्वच्छता के संबंध में आवेदन पत्र ।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार - पत्र के माध्यम से झुग्गी - झोपड़ी बस्ती में आवश्यक जन - सुविधाओं की अव्यवस्था की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ । आशा है आप जनहित में मेरा पत्र अवश्य प्रकाशित करेंगें।

झुग्गी झोपड़ियों में समाज का अत्यंत निर्धन वर्ग रहता है । उन्हें पीने के लिए स्वच्छ जल तक नहीं मिलता । सफाई का तो प्रश्न ही नहीं उठता । मक्खी - मच्छरों ने यहाँ के निवासियों का जीवन दूभर कर दिया है । सरकार इन झुग्गी वासियों की उपेक्षा करती है ।

सरकार को इन्हें भी जीवनोपयोगी सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए । आशा है कि आप हमें निराश नही करेंगे ।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

राकेश बाली

पता .....

दिनांक .....

A.13.

माडर्न स्कूल,
दिल्ली

सूचना

विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए सर्दियों की छुट्टियों में 26-27 दिसंबर को दिल्ली-भ्रमण का आयोजन किया जा रहा है । इसमें दिल्ली के सभी ऐतिहासिक और प्रसिद्ध स्थलों का भ्रमण कराया जाएगा । जो विद्यार्थी जाने के इच्छुक हैं वे अपने कक्षा-अध्यापक से संपर्क करें तथा 20 दिसंबर तक अपने नाम और राशि जमा करवा दें ।

दिनांक : 18.12.2017

प्राचार्य
(हस्ताक्षर) **5**

अथवा

नवोदय विद्यालय,
जौनपुर
समाज सेवा परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय की समाज सेवा परिषद नगर के अनाथ बच्चों के आवास 'बाल ग्राम' में जाकर उनकी स्थिति और आवश्यकता को समझने के लिए एक कार्यक्रम बनाने जा रही है । जो सेवाभावी विद्यार्थी इसमें रुचि रखते हैं वे अपने नाम समाज सेवा परिषद के कार्यालय में 30 अक्टूबर तक दे दें ।

दिनांक : अक्टूबर 15, 2017

राकेश गुप्ता
अध्यक्ष, समाज सेवा समिति **5**

A.14.

अखिलेश – हलो राजेंद्र! बधाई हो!
राजेंद्र – धन्यवाद!
अखिलेश – पूरे बोर्ड में प्रथम आकर तूने कमाल कर दिया या! बहुत बधाई!
राजेंद्र – धन्यवाद अखिलेश! मुझे सचमुच खुद विश्वास नहीं हो रहा ।

अखिलेश – परंतु मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास आज सच हो गया! मैं कहा करता था न कि एक-न-एक दिन तू कोई कारनामा ज़रूर करेगा ।

राजेंद्र – बस यह तेरे जैसे दोस्तों और भला चाहने वालों की दुआएँ हैं । वरना मैं किस योग्य हूँ!

अखिलेश – यही! यही तो बात मुझे तेरा दीवाना बना देती है । तुझमें जो विनम्रता है, मैं इसका कायल हूँ ।

राजेंद्र – भाई अखिलेश! मैं जानता हूँ! मेरे से योग्य कितने ही लड़के-लड़कियाँ और हैं । मेरा भाग्य है कि मैं प्रथम आ गया । कई लड़के-लड़कियाँ दो-दो नंबरों से मेरे पीछे हैं ।

अखिलेश – भगवान करे! तू यशस्वी बने । माता-पिता को मेरी ओर से बधाई देना!

राजेंद्र – ज़रूर-ज़रूर ।

अखिलेश – अरे यह तो बता! मिठाई कब खिलाएगा ?

राजेंद्र – जब तेरे पास वक्त हो । अभी चल!

अखिलेश – चल! खाने के लिए तो मैं तैयार ही रहता हूँ । **5**

अथवा

संतोष – रमेश, आज का समाचार-पत्र पढ़ा ?

रमेश – हाँ यार, बाढ़ के कारण गाँववालों का बुरा हाल हो गया है । सारी फसलें नष्ट हो गई हैं । गाँववासी बेघरबार हो गए हैं । वे शहरों में लाए जा रहे हैं ।

संतोष – यार, मेरे मन में आ रहा है कि कुछ किया जाए ।

रमेश – हम क्या कर सकते हैं ?

संतोष – हम कुछ सहायता तो कर ही सकते हैं!

रमेश – हमारे पास साधन भी तो नहीं ।

संतोष – हम उनके लिए कुछ साधन जुटा तो सकते हैं!

रमेश – यार कहना आसान है । कौन हम पर विश्वास करेगा ?

संतोष – देख भाई! यूँ घर बैठे बातें फोड़ने से तो कुछ नहीं होगा । हम उन कैंपों में चलते हैं, जहाँ इन्हें बसाया जा रहा है । वहाँ जाकर देखेंगे और जो सहायता बन पड़ेगी करेंगे ।

रमेश – तो चलें ।

संतोष – नेकी और पूछ-पूछ! मैं आ रहा हूँ ।

रमेश – चलेंगे कैसे ?

संतोष – तेरे पास साइकिल है न! मैं भी साइकिल लेकर आ रहा हूँ ।

रमेश – ठीक है, मैं इंतज़ार कर रहा हूँ । **5**

A.15.

एनर्जी

- नसों में नई ऊर्जा भर दे!
- मुँह में पानी ला दे!
- सुगंध से महमहा दे!
- पार्टी की शान बढ़ा दे!

ताजे फलों से भरपूर!
प्राकृतिक सुगंध और गुणों से लबरेज!
स्वाद और स्वाभाविक रंगों से संपन्न!!
पीजिए एनर्जी पेय!

कार्यालय : 30, अंधेरी, मुंबई **मोबाइल :** 9930484859

5

अथवा

जिंदगी के सुहाने पलों का आनंद

वाटरपार्क

में लीजिए!!

- तरह-तरह के पानी के खेल!
- रोमांच से भरपूर झूले!
- नए-नए खेलों का आनंद!
- सुस्वादु, लज़ीज़ व्यंजनों और पेयों का मज़ा!

बच्चों, महिलाओं, प्रौढ़ों, बूढ़ों और युवा-युवतियों के लिए
तरह-तरह के आनंदपूर्ण मनोरंजन!
दिन-भर के लिए प्रति व्यक्ति टिकट-मात्र 450 रुपये ।
3 साल से कम बच्चों के लिए मुफ्त प्रवेश!

संपर्क : अमित सिंग, वाटरपार्क मैनेजर गांवदेवी मैदान, ठाणे **मोबाइल :** 9980145678

5

❖❖❖❖